ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा



हिन्दी में

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

पूजा विधि, सामग्री और आरती सहित

SATYANARAYAN PUJA
GETTING BLESSING FROM LORD VISHNU
satyanarayanpuja.com

ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्री सत्यनारायणाय नमः ॥

श्री सत्यनारायण भगवान की संपूर्ण व्रत कथा

SATYANARAYAN VRAT KATHA

पूर्णिमा, संक्रांति या किसी भी शुभ अवसर पर परिवार के साथ भगवान सत्यनारायण का पूजन करके यह कथा पढ़ें या सुनें, फिर आरती करके सबको प्रसाद बांटें।

विषय-सूची CONTENTS

01	व्रत परिचय	कथा का स्रोत, पूजा का समय	3
02	पूजा सामग्री	आवश्यक वस्तुओं की सूची	4
03	पूजा विधि	संकल्प से आरती तक, आरती विधि	6
04	श्री सत्यनारायण व्रत कथा	पांच अध्यायों में संपूर्ण कथा	10
	पहला अध्याय: नारदजी का प्रश्न		10
	दूसरा अध्याय: निर्धन ब्राह्मण और लकड़हारा		12
	तीसरा अध्याय: राजा उल्कामुख और साधु वैश्य		14
	चौथा अध्याय: लता-पत्तों वाली नाव और कलावती का प्रसाद		17
	पांचवां अध्याय: राजा तुंगध्वज और ग्वाले		19
05	श्री सत्यनारायण जी की आरती	ॐ जय लक्ष्मी रमणा	21
06	श्री जगदीश जी की आरती	ॐ जय जगदीश हरे	22
07	आरती का अर्थ	हर पद का सरल अर्थ	23
08	समापन प्रार्थना	क्षमा प्रार्थना, जयकारा	24

Satyanarayan Puja

प्रारम्भ

श्री सत्यनारायण व्रत: परिचय

कथा का स्रोत, महत्व और पूजा का समय

श्री सत्यनारायण व्रत कथा वह पवित्र कथा है जो हर सत्यनारायण पूजा में पढ़ी या सुनी जाती है। परंपरा के अनुसार यह स्कंद पुराण के रेवा खंड से ली गई मानी जाती है, यद्यपि कुछ विद्वान इसे बाद में जोड़ा गया अंश मानते हैं जो केवल कुछ पांडुलिपियों में मिलता है। यह कथा नैमिषारण्य में श्री सूतजी ने शौनक आदि ऋषियों को सुनाई थी और इसके पांच अध्याय हैं।

मुख्य पूजन के बाद और आरती से पहले पुरोहित या घर के कोई बड़े-बुजुर्ग कथा पढ़ते हैं और सभी लोग हाथ जोड़कर श्रद्धा से सुनते हैं। बहुत से परिवार पूर्णिमा, संक्रांति या गृहप्रवेश, विवाह जैसे शुभ अवसरों पर यह कथा करवाते हैं। नीचे पांचों अध्यायों की पूरी कथा क्रम से दी गई है।

सत्यनारायण पूजा विधि भगवान सत्यनारायण की पूजा का क्रमवार तरीका है। भगवान सत्यनारायण भगवान विष्णु का कृपालु रूप हैं, जिनके नाम का अर्थ है “सत्य स्वरूप नारायण”। इस पेज पर पूजा के हर चरण को विस्तार से, सरल मंत्रों के साथ बताया गया है, जिन्हें कोई भी भक्त बोल सकता है। अगर आप पूजा के क्रम और इसे कौन कर सकता है, इसकी संक्षिप्त जानकारी चाहते हैं तो सत्यनारायण पूजा की प्रक्रिया पढ़ें।

अलग-अलग क्षेत्रों और परिवारों में रीति-रिवाज थोड़े अलग होते हैं, और कई घरों में पंडित जी अपनी परंपरा के अनुसार पूजा कराते हैं। नीचे घर पर की जाने वाली पूजा का सामान्य रूप दिया गया है। जहां संदेह हो, वहां याद रखें कि सही उच्चारण से अधिक महत्व श्रद्धा और सच्चे मन का है।

Satyanarayan Puja

पूजा की तैयारी

सत्यनारायण पूजा सामग्री

पूजा के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची

सत्यनारायण पूजा की तिथि तय होने के बाद अगला काम पूजा सामग्री जुटाना है। जल्दी खराब न होने वाली चीज़ें कुछ दिन पहले और ताज़ी चीज़ें एक दिन पहले खरीद लेने से आखिरी समय की भाग-दौड़ से बचा जा सकता है। ज़्यादातर सामग्री किसी भी स्थानीय पूजा भंडार पर मिल जाती है, और कई दुकानों पर सत्यनारायण पूजा की तैयार किट भी मिलती है। नीचे दी गई मात्रा सामान्य घरेलू पूजा के लिए एक अनुमान है; अपने मेहमानों की संख्या और पारिवारिक परंपरा के अनुसार इसे घटा-बढ़ा सकते हैं।

॥ वेदी और मंडप की सामग्री ॥

- भगवान सत्यनारायण की तस्वीर या मूर्ति (1), और हो सके तो माता लक्ष्मी की तस्वीर
- लकड़ी की चौकी या छोटी मेज़ (1)
- चौकी पर बिछाने के लिए साफ लाल या पीला कपड़ा (1)
- मंडप के लिए केले के पौधे या पत्ते (लगभग 4)
- आम के पत्ते (2 गुच्छे), कलश और दरवाज़े के तोरण के लिए
- बैठने के लिए आसन (2, या पूजा करने वाले हर व्यक्ति के लिए एक)
- रंगोली बनानी हो तो रंगोली के रंग या चावल का आटा

॥ कलश की सामग्री ॥

- कलश या लोटा, हो सके तो तांबे या पीतल का (1)
- साफ जल, और उपलब्ध हो तो थोड़ा गंगाजल
- जटा वाला या सूखा नारियल (1)
- नारियल लपेटने के लिए लाल कपड़ा या चुनरी (1)
- कलश में डालने के लिए सिक्का और सुपारी (1-1)
- मौली (कलावा), 1 गोला

॥ पूजन सामग्री ॥

- रोली और कुमकुम (1-1 पैकेट)
- हल्दी, 1 पैकेट
- चंदन (घिसा हुआ या पाउडर), 1 पैकेट

Satyanarayan Puja

- अक्षत (साबुत कच्चे चावल), अर्पण के लिए लगभग 50 ग्राम, और कलश व नवग्रह की ढेरियों के लिए लगभग 1 किलो
- पान के पत्ते, कम से कम 5
- सुपारी, लगभग 25, जिनमें एक गणेश जी के लिए, एक कलश के लिए और नौ नवग्रह के लिए
- खुले फूल और मालाएं
- तुलसी के पत्ते, भरपूर मात्रा में, क्योंकि नैवेद्य की हर वस्तु के साथ तुलसी अर्पित की जाती है
- गणेश पूजा के लिए दूर्वा घास
- भगवान के वस्त्र के रूप में कपड़े का छोटा टुकड़ा, जनेऊ या मौली
- दक्षिणा के लिए सिक्के या रुपये

॥ दीपक और आरती की सामग्री ॥

- दीया, पीतल या मिट्टी का (1 या अधिक)
- रुई की बत्तियां (1 पैकेट)
- शुद्ध घी, लगभग 250 ग्राम
- अगरबत्ती या धूप (1 पैकेट)
- कपूर (1 पैकेट)
- घंटी, और परिवार में प्रचलन हो तो शंख
- माचिस
- पूजा की थाली और छोटी कटोरियां

॥ प्रसाद और नैवेद्य की सामग्री ॥

- शीरा या पंजीरी के लिए: सूजी या गेहूं का आटा, घी, चीनी, दूध, केले, इलायची, काजू और किशमिश, परंपरा से सवा माप में।
- पंचामृत के लिए: दूध, दही, घी, शहद और चीनी
- केले और मौसमी फल
- इच्छा हो तो सूखे मेवे और कोई मिठाई

॥ अन्य उपयोगी सामग्री ॥

- सत्यनारायण कथा की पुस्तक और आरती का पाठ
- आचमन के लिए जल का छोटा पात्र और चम्मच
- हाथ और बर्तन पोंछने के लिए साफ कपड़ा
- प्रसाद बांटने के लिए छोटी प्लेटें या पत्तों के दोने

Satyanarayan Puja

पूजन क्रम

सत्यनारायण पूजा विधि

संकल्प से आरती तक, क्रमवार

॥ पूजा शुरू करने से पहले ॥

स्नान करके साफ कपड़े पहनें और सजी हुई चौकी के सामने पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके साफ आसन पर बैठें। भगवान सत्यनारायण की तस्वीर या मूर्ति, कलश, दीपक, फूल, तुलसी के पत्ते, पंचामृत, फल और प्रसाद पहले से अपनी जगह पर रखे होने चाहिए। कई भक्त पूजा पूरी होने तक व्रत रखते हैं, लेकिन जो लोग व्रत नहीं रख सकते, जैसे बुजुर्ग, बच्चे, गर्भवती महिलाएं या अस्वस्थ लोग, उनके लिए यह अनिवार्य नहीं है।

॥ आरंभ की विधि ॥

1. **आचमन (शुद्धि):** दाहिनी हथेली में थोड़ा जल लेकर तीन बार पिएं और बोलें “ॐ केशवाय नमः”, “ॐ नारायणाय नमः”, “ॐ माधवाय नमः”। फिर थोड़े जल से हाथ धो लें।
2. **दीप प्रज्वलन:** घी का दीपक और धूप-अगरबत्ती जलाएं। दीपक को पूजा का साक्षी मानकर प्रणाम करें।
3. **संकल्प:** दाहिने हाथ में थोड़ा जल, अक्षत और एक फूल लें। अपना नाम, गोत्र (यदि पता हो), तिथि, स्थान और पूजा का उद्देश्य बोलें, जैसे: “मैं अपने परिवार के सुख और शांति के लिए सत्यनारायण व्रत और पूजा कर रहा/रही हूं।” फिर जल, अक्षत और फूल को एक थाली में छोड़ दें।
4. **गणेश पूजा:** पूजा बिना विघ्न के पूरी हो, इसलिए सबसे पहले भगवान गणेश की पूजा होती है। गणेश जी के प्रतीक के रूप में सुपारी या छोटी मूर्ति पर कुमकुम, अक्षत, फूल, दूर्वा और मिठाई चढ़ाएं और बोलें “ॐ गं गणपतये नमः”।
5. **कलश पूजा:** आम के पत्तों और नारियल से सजा जल का कलश पवित्र जल और देवताओं की उपस्थिति का प्रतीक है। उस पर कुमकुम और हल्दी लगाएं, अक्षत और फूल चढ़ाएं और बोलें “ॐ वरुणाय नमः”।
6. **नवग्रह पूजा:** कई घरों में इसके बाद नौ ग्रहों की पूजा होती है, आमतौर पर चावल की नौ छोटी ढेरियों या नौ सुपारियों पर। अक्षत, फूल और कुमकुम चढ़ाते हुए बोलें “ॐ नवग्रहेभ्यो नमः”।

Satyanarayan Puja

॥ भगवान सत्यनारायण की पूजा ॥

यह विधि का मुख्य भाग है। नीचे दिए गए अर्पण उपचार (सेवा) की पारंपरिक पद्धति के अनुसार हैं। जो परिवार संक्षिप्त पंचोपचार पूजा करते हैं, वे केवल पांच चीज़ें अर्पित करते हैं: चंदन, फूल, धूप, दीप और नैवेद्य। पूर्ण षोडशोपचार पूजा में सोलह चरण होते हैं, और नीचे उनमें से सबसे प्रचलित चरण दिए गए हैं।

1. **ध्यान:** हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करें: चार भुजाओं वाले, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए हुए, साथ में माता लक्ष्मी। बोलें "ॐ श्री सत्यनारायणाय नमः, ध्यानं समर्पयामि"।
2. **आवाहन:** तस्वीर या मूर्ति पर फूल चढ़ाकर भगवान को पधारने का निमंत्रण दें: "ॐ श्री सत्यनारायणाय नमः, आवाहयामि"।
3. **आसन:** भगवान के आसन के रूप में अक्षत या फूल अर्पित करें।
4. **पाद्य और अर्घ्य:** चम्मच या फूल से भगवान के चरणों और हाथों के लिए थोड़ा जल अर्पित करें।
5. **स्नान:** यदि मूर्ति या शालिग्राम है तो उसे पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और चीनी) से और फिर शुद्ध जल से स्नान कराएं। तस्वीर हो तो फूल या तुलसी के पत्ते से कुछ बूंदें छिड़क दें।
6. **वस्त्र:** कपड़े का एक टुकड़ा, जनेऊ या मौली (कलावा) अर्पित करें।
7. **गंध:** मूर्ति या तस्वीर के फ्रेम पर चंदन, कुमकुम और हल्दी लगाएं।
8. **अक्षत और पुष्प:** अक्षत, फूल और माला अर्पित करें। तुलसी भगवान विष्णु को विशेष रूप से प्रिय है, इसलिए तुलसी के पत्ते भरपूर चढ़ाएं।
9. **धूप और दीप:** भगवान के सामने धूप और दीपक घुमाएं।
10. **नैवेद्य:** प्रसाद (शीरा या पंजीरी), पंचामृत, फल और केला भगवान के सामने रखें और हर एक पर तुलसी का पत्ता रखें। थाली के चारों ओर थोड़ा जल छिड़कें और बोलें "ॐ श्री सत्यनारायणाय नमः, नैवेद्यं समर्पयामि"।
11. **तांबूल और दक्षिणा:** पान के पत्ते, सुपारी और दक्षिणा के रूप में सिक्का या कुछ धन अर्पित करें।

भगवान के साथ माता लक्ष्मी की भी पूजा की जाती है। कुमकुम, फूल और अक्षत चढ़ाते हुए बोलें "ॐ महालक्ष्म्यै नमः"। अर्पण करते समय आप अपनी इच्छा अनुसार "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का जप भी कर सकते हैं।

॥ कथा पाठ ॥

अर्पण के बाद पूरा परिवार साथ बैठकर सत्यनारायण कथा पढ़ता या सुनता है। कथा में पांच अध्याय हैं, जिन्हें परंपरा से स्कंद पुराण के रेवा खंड का भाग माना जाता है। इसमें काशी के गरीब ब्राह्मण, लकड़हारे, राजा उल्कामुख, साधु वणिक और उसकी पुत्री कलावती, और राजा तुंगध्वज की कथाएं हैं। कई परिवार कथा सुनते समय हाथ में थोड़े

Satyanarayan Puja

अक्षत या फूल रखते हैं और हर अध्याय के अंत में उन्हें अर्पित करते हैं। कुछ लोग अध्यायों के बीच घंटी बजाते या शंख बजाते हैं।

॥ समापन की विधि ॥

1. **आरती:** कपूर या नया दीपक जलाकर सत्यनारायण जी की आरती "ॐ जय लक्ष्मी रमणा" गाएं। सभी लोग खड़े होकर आरती में शामिल होते हैं, और फिर आरती की ज्योति सबको दी जाती है।
2. **पुष्पांजलि और प्रदक्षिणा:** हाथ जोड़कर अंजलि भर फूल अर्पित करें। श्रद्धा के रूप में अपनी जगह पर घूमकर (या जगह हो तो वेदी के चारों ओर) प्रदक्षिणा करें।
3. **हवन (वैकल्पिक):** कुछ परिवार आरती के बाद छोटा हवन करते हैं, जिसमें "ॐ श्री सत्यनारायणाय स्वाहा" बोलते हुए अग्नि में घी और हवन सामग्री की आहुति दी जाती है।
4. **क्षमा प्रार्थना:** हाथ जोड़कर भगवान से पूजा में जाने-अनजाने हुई भूलों के लिए क्षमा मांगें।
5. **प्रसाद:** प्रसाद पहले सभी उपस्थित लोगों में बांटा जाता है, फिर पड़ोसियों और उन लोगों तक भी पहुंचाया जाता है जो पूजा में नहीं आ सके। जिन्होंने व्रत रखा हो, वे प्रसाद से ही व्रत खोलते हैं।

॥ ध्यान रखने योग्य बातें ॥

- प्रसाद का सम्मान करें। स्वयं कथा में बताया गया है कि सत्यनारायण भगवान को चढ़ाए गए प्रसाद को कभी ठुकराना या अनदेखा नहीं करना चाहिए।
- संकल्प में लिया गया वचन निभाएं। सत्य बोलना और अपना वचन पूरा करना ही इस व्रत का मुख्य संदेश है।
- अगर आप संस्कृत नहीं जानते तो मंत्र धीरे-धीरे बोलें या अपनी भाषा में प्रार्थना करें। परंपरा के अनुसार सबसे बड़ी बात भक्ति है।
- बचे हुए फूल और तुलसी के पत्ते लापरवाही से न फेंकें। कई परिवार इन्हें किसी पेड़ के नीचे रख देते हैं या बहते जल में प्रवाहित करते हैं।

॥ आरती कैसे करें ॥

आरती के समय एक व्यक्ति (प्रायः पूजा करने वाले यजमान या घर की बड़ी महिला) घी का दीपक या कपूर जलाकर आरती की थाली भगवान के सामने धीरे-धीरे घड़ी की दिशा में (दक्षिणावर्त) घुमाते हैं, और बाकी सब लोग खड़े होकर ताली बजाते हुए साथ में गाते हैं। पूरी आरती के दौरान घंटी बजाई जाती है।

- दीपक घी से जलाएं या कपूर का प्रयोग करें, और आरती की थाली में फूल और थोड़े अक्षत रखें।

Satyanarayan Puja

ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा

- थाली को धीरे-धीरे घड़ी की दिशा में घुमाएं: प्रचलित परंपरा के अनुसार चार बार भगवान के चरणों के सामने, दो बार नाभि के सामने, एक बार मुख के सामने और फिर सात बार पूरी प्रतिमा के सामने।
- हर पद के बाद सब मिलकर "ॐ जय लक्ष्मी रमणा" गाएं और ताल में ताली या घंटी बजाएं।
- आरती के बाद दीपक सभी उपस्थित लोगों के सामने ले जाएं; हर व्यक्ति लौ के ऊपर हथेलियां घुमाकर आंखों और सिर से लगाता है।
- इसके बाद सबको सत्यनारायण प्रसाद, यानी शीरा, पंचामृत और फल बांटें। कोई भी बिना प्रसाद लिए न जाए।

Satyanarayan Puja

ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा

कथा: पहला अध्याय

नारदजी का प्रश्न

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

श्री व्यासजी ने कहा: एक समय नैमिषारण्य तीर्थ में शौनक आदि सभी ऋषियों और मुनियों ने पुराणों के ज्ञाता श्री सूतजी महाराज से पूछा: "हे महामुने! किस व्रत अथवा तपस्या से मनोवांछित फल प्राप्त होता है? हम सब उसे सुनना चाहते हैं, कृपा करके कहिए।"

श्री सूतजी बोले: इसी प्रकार देवर्षि नारदजी के पूछने पर भगवान कमलापति ने उनसे जो कहा था, वही मैं आपसे कहता हूं, आप लोग ध्यान से सुनें। एक समय योगी नारदजी लोगों के कल्याण की कामना से अनेक लोकों में भ्रमण करते हुए मृत्युलोक में आए। यहां उन्होंने देखा कि अपने-अपने कर्मों के फल से अनेक योनियों में जन्मे सभी प्राणी तरह-तरह के कष्ट भोग रहे हैं। "किस उपाय से इनके दुखों का निश्चित रूप से नाश हो सकता है", मन में ऐसा विचार करके वे विष्णुलोक गए। वहां शंख, चक्र, गदा, पद्म और वनमाला से सुशोभित चार भुजाओं वाले भगवान श्री नारायण के दर्शन करके वे उनकी स्तुति करने लगे।

नारदजी बोले: हे वाणी और मन से परे स्वरूप वाले, अनंत शक्ति से संपन्न, आदि, मध्य और अंत से रहित, निर्गुण होकर भी सभी कल्याणकारी गुणों से युक्त, संपूर्ण सृष्टि के कारण और भक्तों की पीड़ा हरने वाले परमात्मा! आपको नमस्कार है।

स्तुति सुनकर भगवान श्री विष्णु ने नारदजी से कहा: "महाभाग! आप किस प्रयोजन से यहां आए हैं? आपके मन में जो कुछ है, कहिए। मैं आपको सब कुछ बताऊंगा।" **नारदजी बोले:** "भगवन! मृत्युलोक में अपने पापकर्मों के कारण अनेक योनियों में जन्मे सभी लोग बहुत प्रकार के क्लेशों से दुखी हैं। हे नाथ! यदि मुझ पर आपकी कृपा हो तो बताइए कि किस सरल उपाय से उनके कष्ट दूर हो सकते हैं।"

श्री भगवान ने कहा: "हे वत्स! संसार पर कृपा करने की इच्छा से आपने बहुत अच्छी बात पूछी है। जिस व्रत को करने से प्राणी मोह से मुक्त हो जाता है, वह मैं आपको बताता हूं, सुनिए। स्वर्ग और मृत्युलोक दोनों में दुर्लभ, भगवान सत्यनारायण का एक महान पुण्यदायी व्रत है। आपके स्नेह के कारण मैं इसे इस समय कह रहा हूं। विधि-विधान से सत्यनारायण व्रत करके मनुष्य इस लोक में शीघ्र सुख पाता है और परलोक में मोक्ष प्राप्त करता है।" भगवान की यह वाणी सुनकर नारद मुनि ने पूछा: "प्रभो! इस व्रत का फल क्या है? इसका विधान क्या है? यह व्रत पहले किसने किया और इसे कब करना चाहिए? यह सब विस्तार से बताइए।"

श्री भगवान ने कहा: "यह सत्यनारायण व्रत दुख और शोक को दूर करने वाला, धन-धान्य

Satyanarayan Puja

बढ़ाने वाला, सौभाग्य और संतान देने वाला तथा सब जगह विजय दिलाने वाला है। किसी भी दिन भक्ति और श्रद्धा के साथ, ब्राह्मणों और बंधु-बांधवों को साथ लेकर, धर्मपूर्वक संध्या के समय भगवान सत्यनारायण की पूजा करनी चाहिए। नैवेद्य के लिए पके केले, घी, दूध, गेहूं का आटा (गेहूं न हो तो साठी चावल का आटा) और शक्कर या गुड़ लें। यह सारी सामग्री सवाया मात्रा में मिलाकर भक्ति से भगवान को निवेदित करनी चाहिए।"

"बंधु-बांधवों के साथ श्री सत्यनारायण भगवान की कथा सुनकर ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी चाहिए और फिर बंधु-बांधवों सहित ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। भक्ति से प्रसाद ग्रहण करके भजन-कीर्तन करना चाहिए और फिर भगवान सत्यनारायण का स्मरण करते हुए अपने घर जाना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य की अभिलाषा अवश्य पूर्ण होती है। विशेष रूप से कलियुग में पृथ्वी पर यही सबसे सरल उपाय है।"

इति श्री स्कंद पुराण के रेवा खंड की श्री सत्यनारायण व्रत कथा का पहला अध्याय संपूर्ण।

Satyanarayan Puja

कथा: दूसरा अध्याय

निर्धन ब्राह्मण और लकड़हारा

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

श्री सूतजी बोले: हे द्विजो! अब मैं बताता हूं कि पहले इस व्रत को किसने किया था। सुंदर काशी नगरी में शतानन्द नाम का एक अत्यंत निर्धन ब्राह्मण रहता था। भूख और प्यास से व्याकुल होकर वह प्रतिदिन भिक्षा के लिए भटकता रहता था। ब्राह्मणों से प्रेम करने वाले भगवान ने उस दुखी ब्राह्मण को देखा और एक वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण करके आदर से पूछा: "हे विप्र! तुम प्रतिदिन इतने दुखी होकर पृथ्वी पर क्यों घूमते रहते हो? हे द्विजश्रेष्ठ! मुझे सब बताओ, मैं सुनना चाहता हूं।"

ब्राह्मण बोला: "प्रभो! मैं बहुत गरीब ब्राह्मण हूं और भिक्षा के लिए ही पृथ्वी पर घूमता हूं। यदि आप मेरी इस दरिद्रता को दूर करने का कोई उपाय जानते हों तो कृपा करके बताइए।" **वृद्ध ब्राह्मण बोले:** "हे ब्राह्मणदेव! सत्यनारायण साक्षात भगवान विष्णु हैं और मनचाहा फल देने वाले हैं। तुम उनका उत्तम व्रत करो, जिसे करने से मनुष्य सब दुखों से मुक्त हो जाता है।" व्रत का पूरा विधान बताकर वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आए भगवान विष्णु वहीं अंतर्धान हो गए।

"वृद्ध ब्राह्मण ने जैसा बताया है, मैं यह व्रत ठीक वैसे ही करूंगा", यही सोचते-सोचते उस ब्राह्मण को रात भर नींद नहीं आई। अगले दिन सुबह उठकर "आज मैं सत्यनारायण का व्रत करूंगा", ऐसा संकल्प लेकर वह भिक्षा के लिए निकला। उस दिन उसे भिक्षा में बहुत धन मिला। उसी धन से उसने बंधु-बांधवों के साथ भगवान सत्यनारायण का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वह ब्राह्मण सब दुखों से छूटकर संपन्न हो गया। उस दिन से वह हर महीने यह व्रत करने लगा। इस प्रकार सत्यनारायण का व्रत करके वह सब पापों से मुक्त हुआ और अंत में उसने दुर्लभ मोक्षपद प्राप्त किया।

सूतजी ने आगे कहा: "पृथ्वी पर जो भी मनुष्य श्री सत्यनारायण का व्रत करेगा, उसके सब दुख दूर हो जाएंगे। इस प्रकार भगवान नारायण ने नारदजी से जो कहा था, वह मैंने आप लोगों को सुना दिया। अब और क्या कहूं?"

ऋषियों ने पूछा: "हे मुने! उस ब्राह्मण से सुनकर इस पृथ्वी पर और किसने यह व्रत किया? हम वह सब सुनना चाहते हैं, क्योंकि इस व्रत में हमारी श्रद्धा बढ़ रही है।" **श्री सूतजी बोले:** मुनियो! पृथ्वी पर जिसने यह व्रत किया, वह सुनिए। एक बार वह ब्राह्मण अपने सामर्थ्य के अनुसार बंधु-बांधवों और परिवार के साथ व्रत कर रहा था। उसी समय एक लकड़हारा वहां आया। लकड़ियों का गट्ठर बाहर रखकर, प्यास से व्याकुल वह ब्राह्मण के घर गया। ब्राह्मण को व्रत करते देखकर उसने प्रणाम किया और पूछा: "हे विप्र! आप यह क्या कर रहे हैं? इसे

करने से क्या फल मिलता है? मुझे विस्तार से बताइए।"

ब्राह्मण ने कहा: "यह सत्यनारायण का व्रत है, जो सभी मनोरथ पूरे करता है। इसी के प्रभाव से मुझे यह सारा धन-धान्य मिला है।" जल पीकर और प्रसाद ग्रहण करके लकड़हारा नगर की ओर चल पड़ा और मन में सोचने लगा: "आज लकड़ी बेचकर जो धन मिलेगा, उसी से मैं भगवान सत्यनारायण का श्रेष्ठ व्रत करूंगा।" यह सोचते हुए वह लकड़ियां सिर पर रखकर नगर के उस भाग में गया जहां धनी लोग रहते थे। उस दिन उसे लकड़ियों का दोगुना दाम मिला।

प्रसन्न मन से वह पके केले, शक्कर, घी, दूध और गेहूं का आटा सवाया मात्रा में लेकर घर आया। फिर उसने अपने बंधु-बांधवों को बुलाकर विधि-विधान से भगवान श्री सत्यनारायण का व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से वह धन और पुत्रों से संपन्न हुआ और इस लोक में अनेक सुख भोगकर अंत में सत्यपुर, अर्थात वैकुंठलोक को गया।

इति श्री स्कंद पुराण के रेवा खंड की श्री सत्यनारायण व्रत कथा का दूसरा अध्याय संपूर्ण।

Satyanarayan Puja

कथा: तीसरा अध्याय

राजा उल्कामुख और साधु वैश्य

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

श्री सूतजी बोले: श्रेष्ठ मुनियो! अब मैं आगे की कथा कहता हूं, सुनिए। प्राचीन काल में उल्कामुख नाम के एक राजा थे। वे जितेंद्रिय, सत्यवादी और अत्यंत बुद्धिमान थे। वे प्रतिदिन देवालय जाते और ब्राह्मणों को धन देकर संतुष्ट करते थे। उनकी रानी कमल के समान मुख वाली, शील, विनय और सौंदर्य से युक्त तथा पतिव्रता थीं। एक दिन राजा अपनी रानी के साथ भद्रशीला नदी के तट पर श्री सत्यनारायण का व्रत कर रहे थे।

उसी समय व्यापार के लिए बहुत सा धन और सामान लेकर साधु नाम का एक वैश्य वहां आया। नदी के किनारे अपनी नाव बांधकर वह राजा के पास गया और उन्हें व्रत करते देखकर विनम्रता से पूछने लगा: “राजन! आप इतनी भक्ति से यह क्या कर रहे हैं? कृपया मुझे बताइए, मैं सुनना चाहता हूं।” **राजा बोले:** “हे साधु! पुत्र आदि की प्राप्ति की कामना से मैं अपने बंधु-बांधवों के साथ अतुल तेज वाले भगवान विष्णु का व्रत और पूजन कर रहा हूं।”

राजा की बात सुनकर साधु ने आदर से कहा: “राजन! मुझे इसका पूरा विधान बताइए। आपके कहे अनुसार मैं भी यह व्रत और पूजन करूंगा। मेरी भी कोई संतान नहीं है।” “इससे अवश्य संतान प्राप्त होगी”, ऐसा सोचकर वह व्यापार का काम पूरा करके प्रसन्न मन से घर लौटा। उसने अपनी पत्नी लीलावती को संतान देने वाले इस सत्यव्रत के बारे में विस्तार से बताया और कहा: “जब हमें संतान होगी, तब मैं यह व्रत करूंगा।”

कुछ समय बाद भगवान सत्यनारायण की कृपा से उसकी सती-साध्वी पत्नी लीलावती गर्भवती हुई। दसवें महीने में उसने एक सुंदर कन्या को जन्म दिया, जो शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की तरह दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। उसका नाम कलावती रखा गया। एक दिन लीलावती ने अपने पति से मधुर वाणी में कहा: “आपने पहले जिस सत्यनारायण व्रत का संकल्प लिया था, उसे अब क्यों नहीं करते?”

साधु बोला: “प्रिये! इसके विवाह के समय व्रत करूंगा।” इस प्रकार पत्नी को आश्वासन देकर वह व्यापार के लिए नगर चला गया। इधर कलावती पिता के घर में बड़ी होने लगी। जब साधु ने देखा कि सखियों के साथ खेलती हुई उसकी पुत्री विवाह योग्य हो गई है, तो उसने एक दूत को आदेश दिया: “कन्या के लिए कोई श्रेष्ठ वर खोजो।” आज्ञा पाकर दूत कांचन नगर गया और वहां से एक वैश्य का पुत्र लेकर आया। उस वैश्य पुत्र को सुंदर और गुणवान देखकर साधु ने अपनी जाति के लोगों और बंधु-बांधवों के साथ प्रसन्न मन से विधिपूर्वक कन्यादान कर दिया।

Satyanarayan Puja

किंतु उस समय भी साधु दुर्भाग्य से भगवान का वह उत्तम व्रत भूल गया। संकल्प के अनुसार विवाह के समय व्रत न करने से भगवान उस पर रुष्ट हो गए। कुछ समय बाद व्यापार में कुशल साधु अपने दामाद के साथ समुद्र के पास बसे रत्नसारपुर नाम के सुंदर नगर में व्यापार करने गया। वह नगर राजा चंद्रकेतु का था। तब भगवान सत्यनारायण ने उसे अपनी प्रतिज्ञा से विमुख देखकर शाप दिया कि इसे कठोर और भारी दुख भोगना पड़ेगा।

एक दिन एक चोर राजा चंद्रकेतु का धन चुराकर उसी स्थान पर आया जहां दोनों वैश्य ठहरे थे। अपने पीछे दौड़ते राजा के सैनिकों को देखकर वह डर गया और धन वहीं छोड़कर भाग गया। राजा के सैनिक वहां पहुंचे और साधु के पास राजा का धन देखकर दोनों वैश्यों को बांधकर ले गए। उन्होंने प्रसन्न होकर राजा से कहा: “प्रभो! हम दो चोर पकड़ लाए हैं, आप आज्ञा दें।” राजा ने बिना कोई विचार किए आज्ञा दे दी, और दोनों को कड़े बंधनों में बांधकर कारागार में डाल दिया गया। भगवान सत्यदेव की माया से किसी ने उनकी बात नहीं सुनी और राजा चंद्रकेतु ने उनका सारा धन भी ले लिया।

भगवान के शाप से घर पर साधु की पत्नी भी बहुत दुखी हो गई। घर में जो कुछ धन था, वह चोर चुरा ले गए। लीलावती शारीरिक और मानसिक पीड़ा से घिरकर, भूख-प्यास से व्याकुल होकर अन्न के लिए दर-दर भटकने लगी। कलावती भी भोजन के लिए रोज इधर-उधर घूमने लगी। एक दिन भूख से पीड़ित कलावती एक ब्राह्मण के घर गई। वहां उसने श्री सत्यनारायण का व्रत-पूजन होते देखा। उसने बैठकर कथा सुनी, भगवान से वरदान मांगा और प्रसाद ग्रहण करके रात होने पर घर लौटी।

माता ने कलावती से प्रेम से पूछा: “बेटी! तू रात तक कहां रुक गई थी? तेरे मन में क्या है?” कलावती ने तुरंत कहा: “मां! मैंने एक ब्राह्मण के घर मनोरथ पूरा करने वाला व्रत होते देखा है।” पुत्री की बात सुनकर लीलावती व्रत करने को तैयार हो गई। उस साध्वी ने प्रसन्न मन से बंधु-बांधवों के साथ भगवान श्री सत्यनारायण का व्रत किया और प्रार्थना की: “भगवन! मेरे पति और दामाद का अपराध क्षमा करें। वे दोनों शीघ्र घर लौट आएं।”

इस व्रत से भगवान सत्यनारायण फिर से प्रसन्न हो गए। उन्होंने राजा चंद्रकेतु को स्वप्न में दर्शन देकर कहा: “हे नृपश्रेष्ठ! प्रातःकाल दोनों वैश्यों को छोड़ दो और उनसे लिया हुआ सारा धन भी लौटा दो, नहीं तो मैं तुम्हारे राज्य, धन और पुत्रों सहित सब कुछ नष्ट कर दूंगा।” ऐसा कहकर भगवान अंतर्धान हो गए।

सुबह राजा ने सभा में बैठकर अपना स्वप्न सबको सुनाया और आज्ञा दी: “दोनों बंदी वैश्यों को तुरंत मुक्त कर दो।” राजपुरुष दोनों को बंधनमुक्त करके राजा के सामने लाए और विनय से बोले: “महाराज! दोनों वैश्य बेड़ियों से मुक्त करके लाए गए हैं।” दोनों वैश्य राजा चंद्रकेतु को प्रणाम करके पिछली घटनाओं को याद करते हुए भय से कांपने लगे और कुछ बोल न सके।

राजा ने उन्हें देखकर आदर से कहा: “आप लोगों को प्रारब्धवश यह महान दुख मिला, पर अब कोई भय नहीं है।” राजा ने उनका क्षौरकर्म आदि करवाया, वस्त्र और आभूषण देकर उन्हें संतुष्ट किया और मधुर वचनों से उन्हें आनंदित किया। पहले जो धन लिया था, उसका

Satyanarayan Puja

दोगुना लौटाया और कहा: “हे साधु! अब आप अपने घर जाइए।” राजा को प्रणाम करके और “आपकी कृपा से हम जा रहे हैं” कहकर दोनों वैश्य अपने घर की ओर चल पड़े।

इति श्री स्कंद पुराण के रेवा खंड की श्री सत्यनारायण व्रत कथा का तीसरा अध्याय संपूर्ण।

Satyanarayan Puja

कथा: चौथा अध्याय

लता-पत्तों वाली नाव और कलावती का प्रसाद

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

श्री सूतजी बोले: साधु वैश्य ने मंगलाचार करके और ब्राह्मणों को दान देकर नाव से अपने नगर की यात्रा आरंभ की। कुछ दूर जाने पर भगवान सत्यनारायण ने उसकी सत्यता की परीक्षा लेनी चाही। दंडी संन्यासी का रूप धारण करके उन्होंने पूछा: “हे साधु! तुम्हारी नाव में क्या भरा है?” धन के मद में चूर साधु ने उपेक्षा से हंसकर कहा: “दंडी! क्यों पूछते हो? क्या कुछ धन लेने की इच्छा है? हमारी नाव में तो बस लता-पत्ते भरे हैं।” ऐसी कठोर वाणी सुनकर भगवान ने कहा, “तुम्हारा वचन सत्य हो”, और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे बैठ गए।

दंडी के चले जाने पर नित्यकर्म करके साधु लौटा तो देखा कि नाव हल्की होकर पानी में ऊपर उठ आई है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, और नाव में केवल लता-पत्ते देखकर वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। होश में आने पर वह बहुत चिंतित हुआ। तब उसके दामाद ने कहा: “आप शोक क्यों करते हैं? यह दंडी का शाप है। वे चाहें तो सब कुछ ठीक कर सकते हैं, इसमें संदेह नहीं। इसलिए हम उन्हीं की शरण में चलें, वहीं हमारी इच्छा पूरी होगी।”

दामाद की बात सुनकर साधु दंडी के पास गया, भक्ति से प्रणाम किया और आदर से बोला: “आपके सामने मैंने असत्य बोलने का जो अपराध किया है, उसे क्षमा करें।” ऐसा कहकर वह बार-बार प्रणाम करता हुआ शोक से व्याकुल हो गया। उसे रोते देखकर दंडी ने कहा: “हे मूर्ख! रोओ मत, मेरी बात सुनो। मेरी पूजा से विमुख होने के कारण ही तुमने बार-बार दुख पाया है।” भगवान की यह वाणी सुनकर वह उनकी स्तुति करने लगा। **साधु ने कहा:** “हे प्रभो! आपकी माया से मोहित होकर ब्रह्मा आदि देवता भी आपके गुणों और रूपों को ठीक-ठीक नहीं जान पाते, फिर मैं मूर्ख आपकी माया से मोहित होकर आपको कैसे जान सकता हूं! आप प्रसन्न हों। मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार आपकी पूजा करूंगा। मैं आपकी शरण में आया हूं। मेरी नाव में जो धन पहले था, उसकी और मेरी रक्षा कीजिए।”

उसकी भक्ति भरी वाणी सुनकर भगवान जनार्दन संतुष्ट हो गए और उसे मनचाहा वर देकर वहीं अंतर्धान हो गए। साधु अपनी नाव पर चढ़ा और उसे धन-धान्य से भरा देखकर बोला: “भगवान सत्यदेव की कृपा से हमारा मनोरथ सफल हो गया।” फिर उसने स्वजनों के साथ भगवान की विधिवत पूजा की और भगवान श्री सत्यनारायण की कृपा से आनंदित होकर, सावधानी से नाव चलाते हुए अपने देश की ओर चल पड़ा। नगर निकट आने पर साधु ने दामाद से कहा: “वह देखो, मेरी रत्नपुरी नगरी दिखाई दे रही है।” फिर उसने अपने आने का समाचार देने के लिए एक दूत को नगर भेजा।

Satyanarayan Puja

दूत ने घर जाकर साधु की पत्नी को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और शुभ समाचार दिया: "सेठजी अपने दामाद और बंधुओं के साथ बहुत सा धन-धान्य लेकर नगर के पास आ गए हैं।" यह सुनकर लीलावती आनंद से भर उठी। उस समय वह श्री सत्यनारायण की पूजा कर रही थी। पूजा पूरी करके उसने पुत्री से कहा: "मैं तुम्हारे पिता के दर्शन के लिए जा रही हूं, तुम भी जल्दी आओ।" माता की बात सुनकर कलावती व्रत पूरा करके, प्रसाद छोड़कर ही अपने पति के दर्शन के लिए दौड़ पड़ी। प्रसाद के इस अनादर से भगवान सत्यनारायण रुष्ट हो गए और उन्होंने उसके पति को नाव और धन सहित जल में डुबो दिया।

अपने पति को न देखकर कलावती शोक से रोती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। नाव को गायब और पुत्री को इतना दुखी देखकर साधु भयभीत होकर सोचने लगा: "यह क्या आश्चर्य हो गया?" नाव चलाने वाले भी सब चिंतित हो गए। लीलावती भी पुत्री की दशा देखकर व्याकुल हो गई और विलाप करती हुई पति से बोली: "अभी-अभी वह नाव सहित कैसे अदृश्य हो गया? न जाने किस देवता की अवहेलना से नाव हर ली गई। श्री सत्यनारायण की महिमा को कौन जान सकता है!" ऐसा कहकर वह स्वजनों के साथ विलाप करने लगी और कलावती को गोद में लेकर रोने लगी।

पति के खो जाने से दुखी कलावती ने पति की खड़ाऊं लेकर उनके पीछे प्राण त्यागने का निश्चय किया। पुत्री की यह दशा देखकर धर्मज्ञ साधु और उसकी पत्नी अत्यंत शोक में डूब गए। साधु सोचने लगा: "या तो भगवान सत्यनारायण ने यह किया है, या हम सब उनकी माया से मोहित हो गए हैं। मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार भगवान श्री सत्यनारायण की पूजा करूंगा।" सबको बुलाकर उसने अपने मन की बात कही और बार-बार भगवान सत्यदेव को दंडवत प्रणाम किया। इससे दीनों के रक्षक भगवान सत्यदेव प्रसन्न हो गए। भक्तवत्सल भगवान ने आकाशवाणी द्वारा कहा: "तुम्हारी पुत्री प्रसाद छोड़कर अपने पति को देखने दौड़ी चली आई है, इसी कारण उसका पति अदृश्य हो गया है। यदि वह घर जाकर प्रसाद ग्रहण करके लौटे, तो हे साधु! तुम्हारी पुत्री अपने पति को अवश्य पा लेगी, इसमें संदेह नहीं।"

आकाशवाणी सुनकर कलावती तुरंत घर गई और आदर से प्रसाद ग्रहण किया। लौटकर उसने अपने स्वजनों और पति को सामने देखा। तब कलावती ने पिता से कहा: "अब घर चलिए, देर क्यों कर रहे हैं?" पुत्री की बात सुनकर साधु संतुष्ट हुआ और विधि-विधान से भगवान सत्यनारायण का पूजन करके धन और बंधु-बांधवों के साथ अपने घर गया। उसके बाद वह हर पूर्णिमा और संक्रांति पर भगवान सत्यनारायण का पूजन करता रहा और इस लोक में सुख भोगकर अंत में सत्यपुर (वैकुंठलोक) को गया।

इति श्री स्कंद पुराण के रेवा खंड की श्री सत्यनारायण व्रत कथा का चौथा अध्याय संपूर्ण।

Satyanarayan Puja

कथा: पांचवां अध्याय

राजा तुंगध्वज और ग्वाले

श्री सत्यनारायण व्रत कथा

श्री सूतजी बोले: श्रेष्ठ मुनियो! अब मैं एक और कथा कहता हूं, सुनिए। अपनी प्रजा के पालन में तत्पर तुंगध्वज नाम का एक राजा था। उसने सत्यदेव के प्रसाद का अनादर करके दुख पाया। एक बार वह वन में शिकार करके एक वटवृक्ष के नीचे आया। वहां उसने देखा कि ग्वाले अपने बंधु-बांधवों के साथ प्रसन्न होकर भक्ति से भगवान सत्यदेव की पूजा कर रहे हैं।

यह देखकर भी राजा अहंकार के कारण न वहां गया और न ही उसने भगवान सत्यनारायण को प्रणाम किया। पूजा के बाद ग्वालों ने भगवान का प्रसाद राजा के पास रख दिया और लौटकर सबने प्रसाद ग्रहण किया। राजा ने प्रसाद को छुआ तक नहीं, और प्रसाद के इस अनादर के कारण उसे बहुत दुख भोगना पड़ा।

उसका सारा धन-धान्य नष्ट हो गया और उसके सौ पुत्र भी मारे गए। राजा ने मन में निश्चय किया: “अवश्य ही भगवान सत्यनारायण ने मेरा यह नाश किया है। इसलिए मुझे वहीं जाना चाहिए जहां श्री सत्यनारायण का पूजन हो रहा था।” ऐसा सोचकर राजा ग्वालों के पास गया और उनके साथ भक्ति और श्रद्धा से विधिपूर्वक भगवान सत्यदेव की पूजा की। भगवान सत्यदेव की कृपा से वह फिर से धन और पुत्रों से संपन्न हो गया तथा इस लोक में सब सुख भोगकर अंत में सत्यपुर को प्राप्त हुआ।

श्री सूतजी बोले: जो व्यक्ति इस परम दुर्लभ श्री सत्यनारायण व्रत को करता है और भगवान की पुण्यमयी, फल देने वाली कथा को भक्ति से सुनता है, उसे भगवान सत्यनारायण की कृपा से धन-धान्य आदि की प्राप्ति होती है, ऐसी मान्यता है। कहा जाता है कि दरिद्र धनवान हो जाता है, बंधन में पड़ा हुआ मुक्त हो जाता है और डरा हुआ व्यक्ति निर्भय हो जाता है, तथा ऐसा व्यक्ति इस लोक में मनचाहे सुख भोगकर अंत में सत्यपुर को जाता है। “हे ब्राह्मणो! इस प्रकार मैंने आपको भगवान सत्यनारायण का व्रत बताया, जिसे करके मनुष्य सब दुखों से मुक्त हो जाता है।”

कलियुग में भगवान सत्यदेव की पूजा विशेष फल देने वाली मानी गई है। भगवान विष्णु को ही कुछ लोग काल, कुछ सत्य, कोई ईश, कोई सत्यदेव और दूसरे लोग सत्यनारायण नाम से पुकारेंगे। अनेक रूप धारण करके भगवान सत्यनारायण सबका मनोरथ पूरा करते हैं। जो व्यक्ति भगवान सत्यनारायण की यह व्रत-कथा पढ़ता या सुनता है, माना जाता है कि भगवान की कृपा से उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

Satyanarayan Puja

इसके बाद सूतजी ने बताया कि पूर्वकाल में जिन्होंने यह व्रत किया था, परंपरा के अनुसार उनका अगला जन्म कैसा हुआ। बुद्धिमान ब्राह्मण शतानन्द अगले जन्म में सुदामा हुए और भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करके उन्होंने मोक्ष पाया। लकड़हारा अगले जन्म में निषादों का राजा गुह हुआ और भगवान श्रीराम की सेवा करके उसने मोक्ष पाया। महाराज उल्कामुख अगले जन्म में राजा दशरथ हुए, जिन्होंने श्री रंगनाथजी की पूजा करके अंत में वैकुंठ प्राप्त किया। धर्मात्मा और सत्यव्रती साधु वैश्य अगले जन्म में राजा मोरध्वज हुए, जिन्होंने आरे से चीरकर अपने पुत्र का आधा शरीर भगवान विष्णु को अर्पित किया और मोक्ष पाया। महाराज तुंगध्वज अगले जन्म में स्वायंभुव मनु हुए और भगवान से जुड़े सब कार्य करके वैकुंठलोक को प्राप्त हुए। जो ग्वाले थे, वे अगले जन्म में व्रजमंडल के गोप हुए और भगवान के शाश्वत धाम गोलोक को प्राप्त हुए।

इति श्री स्कंद पुराण के रेवा खंड की श्री सत्यनारायण व्रत कथा का पांचवां अध्याय संपूर्ण।

॥ कथा का संदेश ॥

हर अध्याय में एक सरल सीख है। गरीब ब्राह्मण और लकड़हारे की कथा बताती है कि सच्ची श्रद्धा धन से बड़ी है, क्योंकि दोनों के पास शुरुआत में बहुत कम था। साधु वैश्य की कथा बताती है कि वचन टालने और झूठ बोलने का फल क्या होता है, और उसका पश्चाताप दिखाता है कि सच्चे मन से क्षमा मांगने पर भगवान क्षमा कर देते हैं। कलावती और राजा तुंगध्वज की कथाएं याद दिलाती हैं कि प्रसाद भगवान की कृपा का प्रतीक है और उसे हमेशा आदर से ग्रहण करना चाहिए, चाहे व्यक्ति कितनी भी जल्दी में हो या कितना भी बड़ा क्यों न हो।

सबसे बड़ी सीख यह है कि सत्य ही ईश्वर का रूप है। सच बोलना, अपने संकल्प निभाना और पवित्र वस्तुओं का सम्मान करना ही इस पूजा का सार है। कथा के बाद परिवार सत्यनारायण जी की आरती गाता है और सबको प्रसाद बांटा जाता है।

Satyanarayan Puja

आरती

ॐ जय लक्ष्मी रमणा

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत नीराजन, घंटा ध्वनि बाजे॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सर्यो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा॥

Satyanarayan Puja

ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा ✦ ॐ जय लक्ष्मी रमणा

भगवान विष्णु की आरती

ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी, स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख फलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

Satyanarayan Puja

भावार्थ

आरती का सरल अर्थ

पहला पद: ॐ जय लक्ष्मी रमणा: हे लक्ष्मीपति, आपकी जय हो। हे सत्यनारायण स्वामी, आप भक्तों के पाप हरने वाले हैं।

दूसरा पद: रत्न जड़ित सिंहासन: आप रत्नों से जड़े सिंहासन पर विराजमान हैं और आपकी अद्भुत छवि शोभा पा रही है। नारद मुनि आपकी आरती उतार रहे हैं और घंटों की ध्वनि गूंज रही है।

तीसरा पद: प्रकट भये कलि कारण: कलियुग में संसार के कल्याण के लिए आप प्रकट हुए और एक गरीब ब्राह्मण को दर्शन दिए। बूढ़े ब्राह्मण का रूप धरकर आपने उसके घर को सोने का महल बना दिया। यह पद कथा के दूसरे अध्याय के काशी के ब्राह्मण शतानन्द की याद दिलाता है: भगवान ने वृद्ध ब्राह्मण बनकर उसे व्रत की विधि बताई थी, और सोने का महल उसके बाद मिली समृद्धि का काव्यात्मक वर्णन है।

चौथा पद: दुर्बल भील कठारो: आपने दुर्बल भील लकड़हारे पर कृपा की और चंद्रचूड़ नाम के एक राजा की विपत्ति दूर की। लकड़हारा कथा के दूसरे अध्याय वाला ही है। राजा चंद्रचूड़ प्रचलित पांच अध्यायों वाली कथा में नहीं आते; उनका प्रसंग सत्यनारायण कथा के कुछ अन्य रूपों में मिलता है।

पांचवां पद: वैश्य मनोरथ पायो: वैश्य ने मनचाही संतान पाई, पर फिर श्रद्धा छोड़ दी और अपना संकल्प भूल गया। हे प्रभु, उसने इसका फल भोगा और फिर आपकी स्तुति की। यह तीसरे और चौथे अध्याय के साधु वैश्य की कथा है।

छठा पद: भाव भक्ति के कारण: सच्चे भाव और भक्ति के कारण आपने क्षण-क्षण में नए रूप धारण किए। जिसने श्रद्धा धारण की, उसके सब काम सफल हुए।

सातवां पद: ग्वाल-बाल संग राजा: राजा ने ग्वालों के साथ वन में आपकी भक्ति की, और हे दीनदयालु हरि, आपने उसे मनचाहा फल दिया। यह पांचवें अध्याय के राजा तुंगध्वज की कथा है, जिसने पहले ग्वालों के दिए प्रसाद का अनादर किया और पश्चाताप के बाद उन्हीं के साथ पूजा की।

आठवां पद: चढ़त प्रसाद सवायो: आपको सवाया प्रसाद, केले के फल और मेवे चढ़ाए जाते हैं। धूप, दीप और तुलसी से सत्यदेव प्रसन्न होते हैं।

नौवां पद: श्री सत्यनारायण जी की आरती: शिवानंद स्वामी कहते हैं कि जो कोई श्री सत्यनारायण जी की यह आरती गाता है, उसे मनवांछित फल मिलता है।

Satyanarayan Puja

क्षमा प्रार्थना

समापन प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

हे सत्यनारायण भगवान! कथा-पाठ, पूजन और आरती में जाने-अनजाने हुई किसी भी भूल को क्षमा करें। हमें सदा सत्य के मार्ग पर रखें, हमारे घर में सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखें और सबका कल्याण करें।

बोलो श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

बोलो श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय।

SATYANARAYAN PUJA
GETTING BLESSING FROM LORD VISHNU

निःशुल्क पुस्तिका

सत्यनारायण पूजा की तैयारी, प्रसाद बनाने की विधि, शुभ तिथियां और अंग्रेज़ी में कथा, सब कुछ एक ही जगह पढ़ें।

स्कैन करें या खोलें
satyanarayanpuja.com
यह पुस्तिका निःशुल्क है। इसे परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।